SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

स्वास्थ्य और सामाजिक चेतना के क्षेत्र में सारंगढ़ राजपरिवार का योगदान एवं उसकी विरासत

*डॉ प्रदीप शुक्ल, प्रोफेसर, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (बिलासपुर)
**सागर कर्ष, शोध छात्र, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (बिलासपुर)

सारंगढ़, जो एक समृद्ध रियासत के रूप में जाना जाता था। अपने गौरवशाली इतिहास और गहन संस्कृति के लिए विशेष पहचान रखता है। सारंगढ़, सारंग और गढ़ से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है बांस का गढ़ या दुर्ग अतएव हम कह सकते हैं कि प्राचीन काल में इस क्षेत्र में बांस के घने जंगल रहे होंगे इसी कारण ही इसका नाम सारंगढ़ पड़ा होगा।[1] फुलझर स्टेट के हस्तलिखित इतिहास में इसका पूरा नाम सारंगपुर मिलता है। [2] इस रियासत के उत्तर में चंद्रपुर जमींदारी, दक्षिण में फुलझर जमींदारी, पूर्व में संबलपुर जिला का बरगढ़ तहसील और पश्चिमी में रायपुर जिले के भटगांव और बिलाईगढ़ जमींदारियां थी।[3] इसका कुल क्षेत्रफल 540 वर्ग मील था।[4] सारंगढ़ का इतिहास मध्यपाषाण काल तक जाता है।[5] और इसे शरभपूरीय शासकों की राजधानी के रूप में भी जाना जाता है।[6] परंतु इस क्षेत्र के इतिहास को समृद्ध करने का पूरा श्रेय रियासत के गोंड राजाओं को देना उचित होगा। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार सारंगढ़ कर राजपरिवार मूल रूप से भंडारा जिला स्थित लांजी से सारंगढ़ आया था। परंतु इसकी कोई विश्वसनीय जानकारी प्राप्त नहीं होती है।[7] सारंगढ़ रियासत के राजाओं की जो सूची प्राप्त होती है उसके अनुसार वीर नरेंद्र साय इस राजवंश के प्रथम

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

राजा थे। इनके वंशज कल्याण साय (1736-1777) ने मराठों को सैनिक सहायता प्रदान की थी फलस्वरूप इनके संबंध मराठों के साथ मैत्रीपूर्ण रहे। कालान्तर में सारंगढ़ ने रतनपुर राज्य का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। कल्याण साय की मृत्यु के बाद विश्वनाथ साय (1778-1808) शासक हुएं। विश्वनाथ साय वीर तथा दयालु शासक थे उनकी दयाशीलता से बंगाल के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स भी प्रभावित थे। सन 1778 ईस्वी में बंगाल के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने युवा अधिकारी अलेक्जेंडर इलियट को सारंगढ़ के रास्ते नागपुर भेजा। इलियट नागपुर नहीं पहुँच पाया और सारंगढ़ के पास ही सालर नामक गांव में अत्यधिक ज्वर के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। राजा साहब ने शव को दफनाने के लिए भूखंड प्रदान किया और इसी जगह पर युवा अंग्रेज अधिकारी का मकबरा बना दिया गया। यह मकबरा राजा साहब की उदारता का बखान करती है। गवर्नर जनरल ने इस उदारता के बदले राजा साहब को हाथी व राजसी पोशाक भेंट दी।[8] राजा विश्वनाथ साय ने संबलपुर के राजा जैतसिंह तथा नागपुर के नाना साहब को सैनिक सहायता प्रदान की थी। जिससे उपहार स्वरूप जैतसिंह ने सरिया परगना तथा नाना साहब ने हाथी, घोड़ा, नगाड़ा और गदा प्रदान किया था।[9] विश्वनाथ जी के शासनकाल में सारंगढ़ की ख्याति फैल चुकी थी। विश्वनाथ साय की मृत्यु के पश्चात उनका पुत्र सुभद्र साय शासक बना। जिसने केवल छह साल ही शासन किया। सुभद्र साय के पश्चात क्रमशः भीखम साय और टिकम साय अल्पावधि के लिए शासक हुए। सन् 1829 में गजराज सिंह सारंगढ़ के राजा हुए और एक वर्ष के बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के पश्चात उनका पुत्र संग्रामसिंह 1830 में राजगद्दी पर बैठा। संग्राम सिंह के शासनकाल में सारंगढ़

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

रियासत,ब्रिटिश अधिकार में चला गया। राजा संग्राम सिंह को नागपुर में चीफ कमिश्नर रिचर्ड टेम्पल द्वारा सामंती शासक (फ्यूडेटरी चीफ) की सनद जनवरी 1866 को प्राप्त हुई। सनद में निम्नलिखित शर्तें उल्लेखित थी[10]-

- राज्य के द्वारा प्रतिवर्ष ₹1400 ब्रिटिश सरकार को अदा किया जाएगा।
- राजा के उत्तराधिकारी के अभाव में गोद लेना स्वीकृत किया जाएगा।
- कदाचरण या कुप्रबंध की स्थिति में शासक को निलंबित किया जा सकता है।

उपरोक्त शर्तों से स्पष्ट हो जाता है की सारंगढ़ ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया था। रियासत का अंतराष्ट्रीय महत्त्व ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण समाप्त हो गया और आंतरिक प्रशासन में ब्रिटिश हस्तक्षेप बढ़ गया। समयानुसार सनद की राशि और शर्ते परिवर्तित हो जाती थी। संग्रामसिंह के पश्चात राजा भवानी प्रताप सिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए। सन् 1889 में राजा भवानी प्रताप के पश्चात् रघुवर सिंह राजा बने परन्तु छह माह बाद ही उनका देहांत हो गया। अल्पवयस्क राजकुमार जवाहिर सिंह को लगभग दो वर्ष की आयु में ही राजा घोषित कर दिया गया। राजा के नाबालिग होने के कारण 1890 से नवंबर 1909 तक राज्य की शासन व्यवस्था राजमाता ने संभाला। राजमाता के प्रशासकीय सहयोग के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा एक सुप्रीडेंटेंट नियुक्त किया गया था। नवंबर 1909 में राजकुमार जवाहिर सिंह का राज्याभिषेक हुआ। वे सारंगढ़ के सर्वाधिक प्रभावशील शासक रहे हैं। इनकी शिक्षा - दीक्षा रायपुर के प्रसिद्ध राजकुमार कॉलेज से पूर्ण हुई थी। बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न राजा साहब के देखरेख में सारंगढ़ का बहुमुखी विकास

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

होने लगा। सन 1911 में जॉर्ज पंचम के ताजपोशी के लिए आयोजित दिल्ली दरबार में राजा साहब ने भाग लिया था। उनकी व्यक्तिगत योग्यता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सन् 1918 में राजा बहादुर तथा 1934 में 'कम्पेनियन ऑफ इंडियन इम्पीरियल' (C.I.E.) की उपाधि प्रदान की थी।[11] राजा बहादुर जवाहिर सिंह के शासनकाल में सारंगढ़ नगर तथा राज्य का विकास अपने चरमोत्कर्ष पर था। जवाहिर सिंह मध्यप्रान्त और बरार की व्यवस्थापिका सभा के सभासद थे और ब्रिटिश संसद द्वारा स्थापित नरेंद्र मंडल (1920) के सदस्य थे।[12] उनकी मृत्यु 1946 में हो गयी और उनके बाद नरेशचंद्र सिंह जी राजा बने। उनके शासन के एक वर्ष बाद ही सारंगढ़ का विलय भारतीय संघ में हो गया। राजा नरेशचंद्र जी की पहचान राजा से अधिक राजनेता की रही है। राजा साहब मध्यप्रदेश राज्य के प्रथम आदिवासी मुख्यमंत्री रहे और अंचल में जन नेता के रूप में खासे लोकप्रिय भी रहे। विलय के पश्चात भी राजपरिवार का सामाजिक एवं राजनीतिक रुतबा कम नहीं हुआ। प्रशासन और समाज कल्याण का जो बीज रियासत काल में बोया गया था वह आज भी नई पीढ़ी के रूप में फल दे रहा है। नरेशचन्द्र जी की तीन पुत्रियां रजनीगंधा जी, कमला देवी एवं पुष्पा देवी जी राजनीति में सफल रहे हैं। दूसरी ओर उनकी छोटी पुत्री मेनकादेवी जी एवं दामाद परिवेश मिश्राजी चिकित्सा तथा सामाजिक क्षेत्र में इस परंपरा निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

सारंगढ़ रियासत में चिकित्सा सेवा का विकास

ब्रिटिश नियंत्रण के पूर्व भारत में आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध जैसे परंपरागत चिकित्सा पद्धति प्रचलित थी। ये पद्धतियां प्रकृति के साथ संबंधित थी और संतुलन पर ज़ोर

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

देती थी। ब्रिटिश नियंत्रण के पश्चात विदेशी चिकित्सा पद्धति देश में प्रचलित होने लगी और इसे व्यवस्थित रूप मिल गया। एलोपैथिक की शुरुआत हुई और अस्पतालों का निर्माण होने लगा। सारंगढ़ रियासत भी इससे अछूता नहीं रहा। रियासत मुख्यालय में चिकित्सा उपलब्ध करने हेतु शासकों द्वारा चिकित्सालयों का निर्माण करवाया गया। स्वतंत्र चिकित्सा विभाग की स्थापना की गई और इसका संचालन राजदरबार से होने लगा। रियासत के अस्पताल का प्रमुख चिकित्सालय सहायक होता था। और इसके सहयोग के लिए कंपाउंडर की नियुक्ति हुई थी। शुरुआती दौर में यहां अन्तर्वासी रोगियों के उपचार हेतु केवल चार बिस्तरों की व्यवस्था की गई थी। बाद के दशकों में यहां सुविधाओं का विस्तार हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सारंगढ़ में आधुनिक चिकित्सालय निर्मित हो चुके थे और उनमें शल्य चिकित्सा तथा टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध हो चुकी थी। बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों मे सारंगढ़ क्षेत्र विभिन्न व्याधियों से जूझ रहा था। ज्वर से लगभग 1878 लोगों की मौत हुई थी। चेचक की बीमारी से 90 लोगों की मौत हुई थी तथा सन् 1918 में इन्फ्लूएंजा के कारण 3000 लोगों की मृत्यु हो चुकी थी। दाद, खाज, खुजली तथा मलेरिया की समस्या अधिकांश समय बनी रहती थी।[13] इन व्याधियों से निपटने के लिए राज्य के द्वारा भरसक प्रयास किया गया था। साफ़ - सफाई और टीकाकरण पर अत्यधिक ध्यान दिया गया था। लोगों को आधुनिक चिकित्सा का महत्व बताया गया और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाने लगा। प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की विजय के उपरान्त शान्ति समारोह दिवस मनाया गया। इसी अवसर पर राजा बहादुर जवाहिर सिंह ने बरमकेला में एक चिकित्सालय का निर्माण करवाया और यहां बेहतर सुविधा

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

उपलब्ध कराने के लिए योग्य कुशल डॉक्टरों की नियुक्ति की गई।[14] रियासत में टीकाकरण को भी प्रोत्साहित किया जाता था। रियासत ने टीकाकरण के लिए दो कर्मचारी नियुक्त किए थे। टीका लगा वाले कर्मचारियों को चिकित्सालय सहायक के पर्यवेक्षण के अधीन रखा गया था। मलेरिया महामारी के दौरान रियासत की ओर से कुनैन की गोलियां मुफ्त में वितरित की जाती थी। 19 मई 1939 को राजा बहादुर जवाहर सिंह द्वारा नगर में सिल्वर जुबली हॉस्पिटल का लोकार्पण किया गया। यह हॉस्पिटल आज मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला सारंगढ़- बिलाईगढ़ का कार्यालय बन चुका है। कालांतर में सिल्वर जुबली हॉस्पिटल के लिए नया भवन स्वीकृत हुआ और आज यह हॉस्पिटल आधुनिक सुविधायुक्त बनकर इस क्षेत्र को सेवा प्रदान कर रहा है। सन् 1943 से 1948 तक हैज़े ने रायगढ़ क्षेत्र (जिसमें सारंगढ़ भी शामिल था) में महामारी का रूप ले लिया था और लगभग 645 लोगों की जान हैज़े ने ले ली थी।[15] जब हैजा ने विकराल रूप धारण कर लिया तो सारंगढ़ रियासत दवारा सारंगढ़ क्षेत्र में हैजा रोधी औषधियां वितरित किया जाने लगा और सामूहिक टीकाकरण का अभियान चलाया गया। राजा जवाहिर सिंह और युवराज नरेशचंद्र सिंह दवाइयां तथा भोजन आदि की व्यवस्था के लिए जुटे रहे। राजा जवाहिर सिंह ने हैज़े के वैक्सीन प्राप्त करने के लिए जी जान लगा दिया है। अंततः उन्हें वैक्सीन तो प्राप्त हो गया पर वैक्सीन के बारे में जागरूकता न होने के कारण आम जनता को वैक्सीन लगाना टेढी खीर हो गया। आखिरकार इस समस्या का समाधान निकालने के लिए युवराज नरेशचंद्र सिंह जी डॉक्टरों के साथ नगर की गलियों में निकल पड़े और जगह – जगह लोगों को इकट्ठा करके उनके सामने अपनी बांह पर वैक्सीन रहित

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

इंजेक्शन लगवाते ताकि लोगों के मन में वैक्सीन का डर और भ्रम दोनों खत्म किया जा सके। धीरे - धीरे लोगों को समझ आ गया कि वैक्सीन से नुकसान नहीं होता है बल्कि महामारी से निपटने के लिए यह एक सुरक्षित माध्यम है। बार-बार इंजेक्शन लगवाने से युवराज नरेशचन्द्र जी की बांह सूज गई परन्तु उन्होंने अपनी तकलीफ को दरकिनार करके लोगों को जागरूक करना सही समझा।[16] पिता जवाहिर सिंह से विरासत में उन्हें सेवा भाव मिला था और उन्होंने यह परंपरा अपनी भावी पीढ़ी को भी सौंप दिया। रियासत मुख्यालय के अलावा ग्रामीण क्षेत्रो में स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रो की स्थापना की गई। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्वास्थ्य सेवा के पहले स्तर के रूप में कार्य करते है,जहां सामान्य बीमारियों,चोटों और छोटी स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज किया जाता है। इसके अलावा यह केंद्र टीकाकारण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, स्वास्थ्य शिक्षा और विभिन्न रोगों की रोकथाम जैसे कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रायगढ़ जिले में पहला प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सन् 1954 में सारंगढ़ तहसील के बरमकेला में खोला गया था।[17] एलोपैथिक चिकित्सा के साथ आयुर्वेद को भी यहां प्रोत्साहित किया गया था। सारंगढ़ क्षेत्र में उलखर(1951), सरिया(1953), लेंध्रा(1955) तथा माधोपली(1956) में आयुर्वेद औषधालय स्थापित हो चुके थे।[18] इन औषधालय को शासन द्वारा सहायता प्राप्त होता था। जन स्वास्थ्य के अलावा पशु चिकित्सा के लिए राज्य की ओर से चिकित्सालय एवं औषधालय का निर्माण किया गया था। चिकित्सा के लिए राज्य की ओर से पर्याप्त व्यय किया जाता था और समय के साथ व्यय में वृद्धि भी की जाती थी। रियासतकालीन सारंगढ़ की चिकित्सा व्यवस्था आसपास के क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध था। शिवरीनारायण तहसील,

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

फूलझर क्षेत्र और चंद्रपुर जमींदारी से लोग चिकित्सा सुविधा प्राप्त करने यहाँ आते। सन् 1907 में सारंगढ़ के चिकित्सालय में आसपास के लगभग 14963 मरीजों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई थी।[19] सारंगढ़ रियासत अब जिला सारंगढ़ - बिलाईगढ़ के नाम से जाना जाता हैं। रियासत काल में जो आधुनिक चिकित्सा सेवा शुरू की गई थी अब वह काफी विकसित हो चुका है। सारंगढ़ - बिलाईगढ़ जिले में कुल तीन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, 16 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तथा 118 उप स्वास्थ्य केंद्र संचालित हो रही है। इन केन्द्रों में 716 VHSC, 1408 मितानिन तथा 70 मास्टर ट्रेनर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।[20] नवनिर्मित जिले के लिए नया जिला अस्पताल अभी प्रस्तावित हैं।

चिकित्सा और सामाजिक चेतना

चिकित्सा और सामाजिक चेतना का संबंध एक गहरा और महत्वपूर्ण विषय है। चिकित्सा और स्वास्थ्य सामाजिक,मानसिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में विकसित होता है। यदि सामाजिक चेतना बढ़ता है तो लोग स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते है और दूसरों की भलाई के लिए सक्रिय रहते है। सामाजिक चेतना और चिकित्सा का समन्वय करते हुए ही बेहतर स्वास्थ्य की कल्पना की जा सकती है। गरीबी, अज्ञानता, जानकारी का अभाव और लापरवाही के कारण ही बीमारी, महामारी का रूप ले लेता है ।सारंगढ़ रियासत के शासकों ने सामाजिक चेतना के महत्त्व को समझा और उन्होंने इसके लिए काफी प्रयास भी किया। राजा जवाहिर सिंह तथा राजकुमार नरेशचंद्र सिंह ने हैजा महामारी के दौरान चिकित्सा के साथ साथ लोगों में जागरूकता लाकर महामारी की विभीषिका को काबू में लाया था। बाद के दशकों में राज्य परिवार के अन्य सदस्यों ने सरकारी योजना, गैर सरकारी संगठन

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

तथा सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य के प्रति सचेत करना शुरू कर दिया। स्वतंत्रता के पश्चात रियासतों का विलय भारतीय संघ में हो गया। सारंगढ़ रियासत अब मध्यप्रदेश का एक विकासखण्ड बन चुका था। राजा नरेशचंद्र सिंह राजनीति में सक्रिय हो गए थे। राजा साहब का राजनैतिक कद काफी ऊंचा हुआ करता था। इसलिए राष्ट्रीय स्तर के राजनेताओं का सारंगढ़ में आगमन होता ही रहता था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति पंडित राजेंद्र प्रसाद जी का आगमन 1954 में सारंगढ़ में हुआ। राजा साहब ने राजेंद्र बाबू से अपने क्षेत्र के सुदूर वनाच्छादित गांव डोंगरीपाली के लिए अस्पताल तथा डॉक्टर के लिए आवास की मांग की। राजा साहब के प्रयासों से डोंगरीपाली को 1963 में अस्पताल प्राप्त हो गया और अस्पताल में एक सहायक चिकित्सा अधिकारी, कंपाउंडर, पट्टी बंधक, एक पानीवाला,मेहतर, धोबी की नियुक्ति की गई। लेकिन घने जंगलों के बीच इस गांव में रहने के लिए कोई डॉक्टर तैयार नहीं हुआ।[21] दुर्गम रास्तों और घने जंगलों के बीच डोंगरीपाली का अस्पताल था। अधिकांशतः यहां स्वास्थ्य संबंधी जागरूकताओं का अभाव था। इस आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में काम करना किसी भी डॉक्टर के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता था। बीमारी के इलाज के साथ – साथ स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता लाना भी डॉक्टर का कर्तव्य होता है परंतु यह इस दोहरे चुनौती का सामना करने के लिए कोई भी डॉक्टर तैयार नहीं हो रहा था। राजा नरेश चंद्र समझ गए थे कि एक योग्य डॉक्टर को सामाजिक तथा मानसिक बंधनों को तोडकर विकट परिस्थितियों में भी काम करना पड़ सकता है। इसलिए जब उनकी छोटी पुत्री मेनका देवी सिंह ने डॉक्टर बनने की इच्छा जाहिर की तब उन्होंने कहा कि उन्होंने कहा कि 'हमारे सारंगढ़ के अधिकांश क्षेत्रों में स्वास्थ्य को लेकर

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

जागरूकता का अभाव है अतः आपको डॉक्टर बनकर अपने ही क्षेत्र की सेवा करना होगा'। अस्सी का दशक आते-आते मेनका जी की शिक्षा पूरी हो गई और उनका विवाह डॉक्टर परिवेश मिश्रा जी से हुई। इस प्रकार राजा साहब को डॉक्टर के रूप में बेटी तथा दामाद दोनों मिल गए। दोनों दम्पत्ति नब्ज़ और नुस्खा वाली डॉक्टरी को त्याग चुके थे। समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना चाहते थे। बीमारी के प्रति सामाजिक सोच को वो बदलना चाहते थे। उनकी इस मंशा को पूरा करने में राजा साहब का भरपूर सहयोग मिला। राजा साहब नें मेनका जी तथा परिवेश जी को डोंगरीपाली क्षेत्र में काम करने की सलाह दी। डोंगरीपाली क्षेत्र में दोनों दंपति को भेज कर राजा साहब नें बरसों पुराना खिन्नता को खत्म किया। इसी दौरान भारत कुष्ठ रोग के भयंकर चपेट में था। कुष्ठ रोग मेडिकल साइंस के 'प्रिवेंटिव एंड सोशल मेडिसिन' का भाग है। इस रोग से निजात पाने के लिए सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता होती। ऐसे में एक डॉक्टर की भूमिका इस रोग के मामले में बदल जाती है। इसमें तकनीकी ज्ञान के अलावा सामाजिक चेतना की भी आवश्यकता है। भारत में कुष्ठ रोग से प्रभावित क्षेत्र सारंगढ़ भी था। कुष्ठ के निवारण के लिए सरकार द्वारा राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम चलाया जा रहा था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 1963 में सारंगढ़ में सर्वेक्षण शिक्षा तथा उपचार केन्द्र स्थापित किए गए थे केंद्र में विशेष रूप से प्रशिक्षित गैर चिकित्सा सहायक को पदस्थ किया गया था। इन सरकारी प्रयासों से भी कुष्ठ काबू में नहीं आ रहा था क्योंकि कुष्ठ या कोढ़ को समाज में बीमारी के बजाय छूत के नाम से जाना जाता है। बीमार व्यक्ति सामने आने से डरता था, उसे समाज से बहिष्कृत होने का डर सताता था। परिवेश जी तथा मेनका जी ने

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

कुष्ठ रोग को खत्म करने के लिए डोंगरीपाली क्षेत्र में काम करना शुरू कर दिया। कुष्ठ से पीड़ित व्यक्ति, डॉक्टर के पास जाने से डरता था इसलिए उनकी जानकारी डॉक्टरों को नहीं मिल पाती थी। काफी मशक्कत के बाद डॉक्टर दंपति को संक्रमित लोगों की जानकारी मिलने लगी। स्वास्थ्य विभाग की मदद से दोनों ने टीकाकरण के साथ - साथ कुष्ठ रोगियों को एम.डी.डी.की खुराक देना शुरू कर दिया। साथ ही मरीजों की मॉनीटरिंग करना भी प्रारंभ किया ताकि मरीजों के द्वारा कोई लापरवाही ना हो सके। मेनका जी की बड़ी बहन पुष्पा जी इस क्षेत्र से लोकसभा सदस्य थी अतः उनको सरकारी सहयोग भी प्राप्त हो रहा था। दोनों के प्रयासों से रायगढ़ जिले में कुष्ठ रोगियों की संख्या में भारी कमी आयी। शुरुआती दौर में कुष्ठ की उपस्थिति दर 13 मरीज प्रति 1000 आबादी थी। अब यह दर 0.3 मरीज प्रति 1000 हो गयी है।[22] इसके पीछे की सबसे बड़ी वजह सामाजिक जागरूकता है। लोग जागरूक होने लगे और सामने आकर इलाज की मांग करने लगे। डॉक्टर दम्पत्ति ने जो राह चुनी थी वह आसान नहीं था। क्षेत्र के लोग फाइलेरिया, मलेरिया तथा घेंघा जैसे रोगों से भी पीड़ित थे। इन रोगों के इलाज के लिए सामाजिक सोच तथा जीवनशैली तक भी बदलना पड़ता है। भारत का पूर्वी हिस्सा आयोडीन की कमी से प्रभावित था। छत्तीसगढ़ में भी आयोडीन की कमी से विभिन्न बीमारियों के लक्षण दिखाई दे रहे थे। महानदी के किनारे स्थिति जेवरा गांव में आयोडीन की कमी से होने वाली घेंघा रोग के कुछ मरीजों ने परिवेश जी का ध्यान आकर्षित किया। इसके अलावा शिशु मृत्यु दर में वृद्धि, मंदबुद्धि तथा शारीरिक विकलांगता आदि भी आयोडीन की कमी से उत्पन्न हो रही थी। प्राकृतिक आयोडीन का स्रोत बहुत कम था अतः इन समस्याओं के खात्मे के लिए आयोडीन

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

युक्त नमक ही एकमात्र उम्मीद जगा रही थी। परिवेश तथा मेनका जी ने रायगढ़ के तत्कालीन एडिशनल कलेक्टर मनोज श्रीवास्तव जी को सुझाव दिया कि जिले में चल रहे जवाहर रोजगार योजना के पारिश्रमिक के रूप में आयोडीन युक्त नमक को भी शामिल किया जाए। ताकि गरीब तबके के लोगों को भी आयोडीन प्राप्त हो सके। मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और पुष्पा जी के प्रयासों से मध्यप्रदेश में बिना आयोडीन के खुले नमक की बिक्री पर पूरी तरह रोक लगा दी गई।[23] डॉक्टरों तथा स्वास्थ्यकर्मियों ने बताया कि आयोडीन युक्त नमक के कारण स्वास्थ्य में परिवर्तन दिखाई देने लगा है और घेंघा तथा अन्य शारीरिक मानसिक दुर्बलताओं का उन्मूलन धीरे धीरे हो रहा है। डॉक्टर दंपति ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि चिकित्सा और सामाजिक चेतना का साथ साथ चलना परिवर्तन ला सकता है। मलेरिया और फाइलेरिया ने आजादी के बाद अपना प्रचंड रूप दिखाना शुरू कर दिया था। सरकारी सहयोग से मलेरिया पर बहुत हद तक काबू पा लिया गया था। सन् 1955 – 1956 में मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का सारंगढ़ तहसील में शुभारंभ हो चुका था। डी.डी.टी.का छिड़काव तथा मलेरिया के लिए औषधि प्रदान करना इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। परंतु फाइलेरिया का टेस्ट न हो पाने के कारण इस पर लगाम कसना मुश्किल हो रहा था। अमूमन फाइलेरिया की जांच सोते हुए मरीज के रक्त से की जाती है पर सोते हुए मरीजों पर टेस्टिंग करना आसान काम नहीं था। आखिरकार पुष्पा जी ने प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव से भेंट की और उन्होंने पूरा मामला समझाया। मामले की गंभीरता को समझते हुए रावजी ने तत्काल अधिकारियों को रायगढ़ पहुंचने का निर्देश दिया। सारंगढ़ नगर में सबसे पहले टेस्टिंग की शुरुआत हुई।[24]

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

जागरूकता और जन सहयोग की जिम्मेदारी राजपरिवार ने ली और आखिरकार फाइलेरिया की भयावहता की पुष्टि हुई। बाद में छत्तीसगढ़ के अन्य शहरों में भी टेस्टिंग सफल होने लगी। सारंगढ़ के इन्हीं प्रयास से राज्य में फाइलेरिया का टेस्टिंग होना शुरू हुआ और बाद में इसके उपचार के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। स्वास्थ्य शिविरों के द्वारा शिशु टीकाकरण में सफलता हासिल किया गया था। परिवेश जी तथा मेनका जी ने शासकीय कन्या विद्यालय के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया और उनकी मदद से गांव - गांव कैंप लगाकर टीकाकरण अभियान को सफल बनाया था। वे लगभग 13,000 बच्चों को तीनों डोज लगाने में सफल रहे थे। परिवेश और मेनका जी के योगदान पर प्रशंसनीय है और समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इनका संघर्ष और काम हमें बताता है कि एक अच्छा चिकित्सक सिर्फ डॉक्टर ही नहीं होता बल्कि समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी होता है। रियासत के सदस्यों ने चिकित्सा और सामाजिक चेतना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं जो न केवल स्थानीय समुदायों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक रहे हैं बल्कि सामाजिक सुधारों के लिए भी प्रेरणास्रोत बने हैं। महत्वपूर्ण नीतियों और कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में राजनीतिक सक्रियता ने इनका भरपूर सहयोग किया है। राजपरिवार के द्वारा परंपरा और आधुनिकता का समन्वय करके समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया गया है।

संदर्भ

1. ब्रिटिशकालीन छत्तीसगढ़ हिंदी गजेटियर, भाग 01,छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर, 2017, पृष्ठ 282
2. पूर्वोक्त, पृष्ठ 282

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

3. डिबरेट, ई.ए, छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेटस, द टाइम्स प्रेस, बॉम्बे,1906, पृष्ठ 200
4. पूर्वोक्त, पृष्ठ 200
5. कोका,एस एल, आदर्श भूमि, गुरुनानक प्रेस, बिलासपुर, 1988, पृष्ठ 23
6. इपिग्राफिया इंडिका,जिल्द 27, पृष्ठ 290 – 291
7. डिबरेट, ई.ए, छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेटस, द टाइम्स प्रेस, बॉम्बे,1906, पृष्ठ 203
8. दैनिक छत्तीसगढ़ रायपुर, 12 सितंबर 2022, पृष्ठ 06
9. शर्मा, सी. एल, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी रायपुर, 2008, पृष्ठ 310
10. एटिचिसन,सी यू, ए कलेक्शन ऑफ ट्रिटीज इंगेजमेंट एंड सनद रिलेटिंग टू इंडिया एंड नेबरिंग कंट्रीज, पृष्ठ 497
11. मेमोरंडा ऑफ़ इंडियन स्टेट्स 1936, पृष्ठ 90
12. ब्रिटिशकालीन छत्तीसगढ़ हिंदी गजेटियर, भाग 01, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर, 2017, पृष्ठ 284
13. पूर्वोक्त, पृष्ठ 287
14. गुरु, शंभु दयाल, रायगढ़ जिला गजेटियर, नई दुनिया प्रेस, इंदौर, 1979, पृष्ठ 311
15. पूर्वोक्त, पृष्ठ 315
16. नवभारत, रायपुर, 23 नवंबर 2020, पृष्ठ 04

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

17. गुरु, शंभु दयाल, रायगढ़ जिला गजेटियर, नई दुनिया प्रेस, इंदौर, 1979, पृष्ठ 324

18. पूर्वोक्त, पृष्ठ 328

19. पूर्वोक्त, पृष्ठ 311

20. कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला सारंगढ़ – बिलाईगढ़

21. निरंतर पहल (मासिक पत्रिका), रायपुर, मार्च 2022, पृष्ठ 22

22. पूर्वोक्त, पृष्ठ 23

23. दैनिक छत्तीसगढ़, रायपुर, 29 फरवरी 2024, पृष्ठ 06

24. देशबंधु, रायपुर, 13 फरवरी 2022, पृष्ठ 06